कूकू और भूरी

लीसा अर्नस्ट

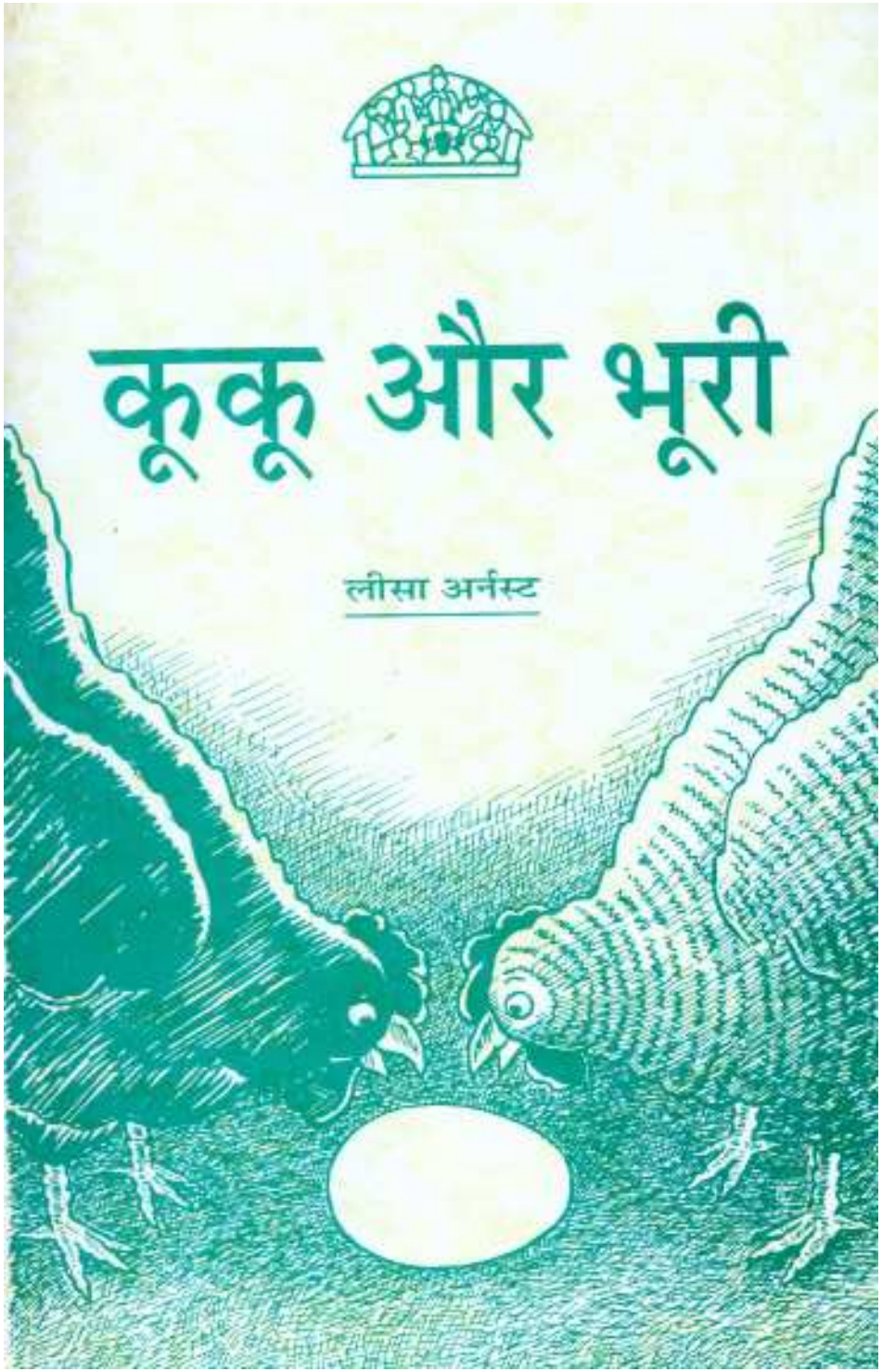

कूकू और भूरी : लीसा अर्नस्ट
अनुवाद : अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन : अविनाश देशपांडे
ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

पांचवां संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य : 15 रुपए
Price : 15 Rupees

Published by Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
Printed at Sun Shine Offset , New Delhi - 110018

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

कूकू और भूरी

लीसा अर्नस्ट

कूकू और भूरी

दो मुर्गियां थीं – कूकू और भूरी। दोनों एक पुराने दबड़े में रहती थीं। कूकू और भूरी काफी मोटी थीं। दोनों को डींग मारने और शान बखारने का बहुत शौक था। आप सोचने होंगे कि क्योंकि कूकू और भूरी ज़्यादातर समय साथ–साथ बिताती थीं इसलिए शायद उनमें अच्छी दोस्ती होगी। परंतु, ऐसा बिल्कुल भी नहीं था। दोनों बहुत कम ही आपस में बातचीत करती थीं।

एक दिन कूकू ने डींग मारी, ''मेरे नए अंडे तो दुनिया में सबसे सुंदर हैं,'' उसने एक लंबी सांस लेते हुए कहा, ''मेरे अंडे तो एकदम रेशम की तरह चिकने हैं।''

भूरी भला कहां चुप रहने वाली थी, ''नहीं, ऐसा नहीं है। मेरे अंडे सबसे ज़्यादा खूबसूरत हैं। देखो न, वो मोतियों की तरह चमक रहे हैं।''

''मेरे अंडे कोरे कागज़ की तरह सफेद हैं,'' कूकू बोली।

''मेरे अंडे एकदम दूध की तरह उजले हैं,'' भूरी ने जवाब दिया।

दोनों मुर्गियों के बीच नोंक–झोंक चलती रही। दोनों का दावा था कि उनके अंडे दुनिया में सबसे सुंदर, सबसे सफेद और सबसे बढ़िया थे।

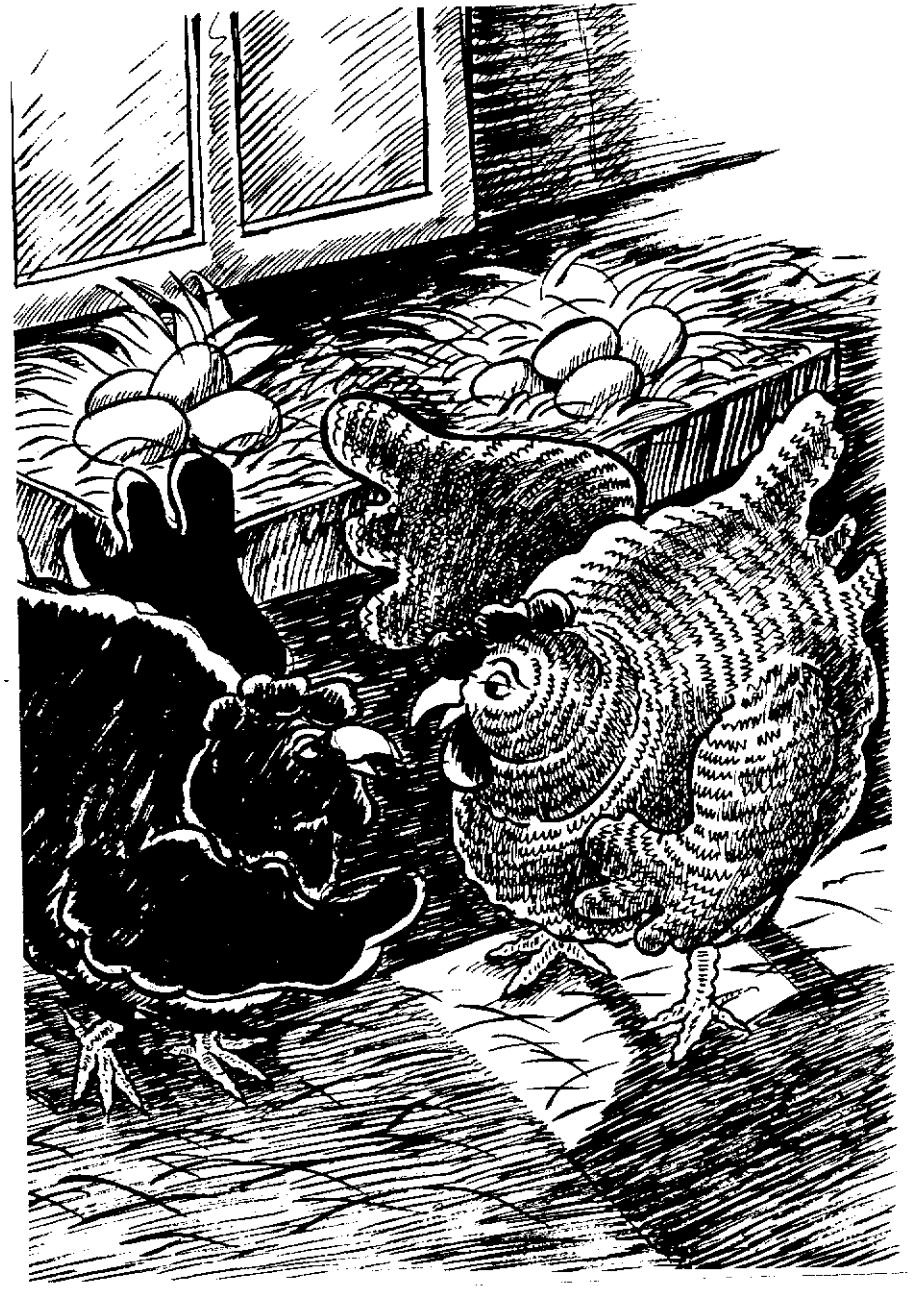

''देखना जब मेरे अंडों में से चूजे निकलेंगे तो वे भी मेरी ही तरह खूबसूरत होंगे,'' कूकू बोली। यह कह कर वो दबड़े के फर्श पर कूदी और धूप में इतरा कर चलने लगी।

भूरी भला कहां चुप रहने वाली थी। वो भी सूखी घास पर अपने पंख फैलाकर थिरकने लगी, ''मेरे चूजे कितने खूबसूरत होंगे।''

दोनों मुर्गियां अपनी खूबसूरती का बयान और गुणगान करने में इतनी व्यस्त थीं कि उनका दबड़े की खिड़की की ओर ध्यान ही नहीं गया।

खिड़की पर एक कुत्ता बैठा था।

कुत्ता उधर से गुज़र रहा था कि उसने दोनों मुर्गियों को शेखी मारते हुए सुना। वो वहां रुका और उसे जो उम्मीद थी वही हुआ। आखिर उसे मौका मिल ही गया।

कुत्ता मुर्गियों के दबड़े में कूद पड़ा। एक ज़ोर का **ध – मा – का** हुआ! दोनों मुर्गियों के घोंसले तहस–नहस हो गए। चारों तरफ सूखी घास उड़ने लगी।

फिर जिस रास्ते कुत्ता आया था वो उसी रास्ते से चुपचाप हवा में गायब हो गया।

काफी देर बाद कूकू और भूरी को होश आया। हवा अब बिल्कुल शांत थी! सब कुछ पहले जैसा ही था। परंतु अपने घोसलों में पहुंचते ही मुर्गियां घबरा गईं।

उनके अंडे गायब थे।

''यह सब तुम्हारी गल्ती के कारण ही हुआ,'' दोनों मुर्गियों ने एक–दूसरे को दोष देते हुए कहा।

''तुमने ही तो खुरुाफ़ात शुरु की थी,'' कूकू चिल्लाई।

''अगर तुम इतनी डींग न मारतीं तो क्या भला मैं अपना घोंसला छोड़ती?'' भूरी भी बुलंद आवाज़ में चिल्लाई।

तभी उन मुर्गियों को पीछे से किसी चीज़ के लुढ़कने की आवाज़ सुनाई दी। कूकू और भूरी ने तुरंत मुड़ कर देखा। उन्हें वहां एक अंडा पड़ा हुआ मिला।

कूकू और भूरी दोनों ज़ोर से चीखीं, ''ये अंडा मेरा है!''

उसके बाद दोनों में जम कर लड़ाई हुई! कूकू को कोई शक नहीं था। वो सोचती थी कि अंडा उसी का है। दूसरी ओर भूरी को भी पक्का विश्वास था कि वो अंडा उसी का है। दोनों यह मानने को बिल्कुल भी तैयार नहीं थीं कि अंडा दूसरी का भी हो सकता है।

अंत में दो कूं–कूं करते कबूतरों ने उन्हें टोका।

''अगर तुम लोग ऐसा करोगी,'' एक कबूतर ने कहा, ''तो यह इकलौता अंडा भी धीरे–धीरे ठंडा हो जाएगा। अगर तुम

दोनों जल्दी नहीं करोगी तो यह अंडा भी बाहर पड़े–पड़े मर जाएगा और फिर झगड़ने के लिए कोई चूजा ही नहीं बचेगा। तुम दोनों चाहो तो इस चूजे को आपस में मिल कर पाल सकती हो।''

कूकू और भूरी ने एक–दूसरे को शक की निगाहों से देखा। ''एक साथ मिलकर पालना! असंभव! यह कभी नहीं हो सकता!'' परंतु इस बीच अंडा और ठंडा हो रहा था।

''चलो, मैं अंडे पर पहले बैठती हूं,'' कूकू ने निर्णय लेते हुए कहा, ''तुम अंडे को बाद में सेना।''

''नहीं, पहले मैं,'' भूरी ने कहा, ''उसके बाद में तुम बैठना।''

एक–दूसरे से सहयोग करना तो कूकू और भूरी ने कभी सीखा ही नहीं था।

''जब अंडे में से चूज़ा निकलेगा तो देखने में वो बिल्कुल मेरी तरह होगा,'' भूरी ने डींग मारते हुए कहा, ''तब तुम्हें पता लगेगा कि यह अंडा किसका है!''

''हां! हां! देख लेना,'' कूकू ने झपटते हुए कहा, ''चूजा देखने में बिल्कुल मेरी ही तरह होगा। आखिर यह है तो मेरा ही अंडा।''

अंत में दोनों मुर्गियां, दिन–रात एक–दूसरे से इस तरह लड़ते–लड़ते तंग आ गईं। उन्हें पता था कि वो एक–दूसरे के विचारों को बिल्कुल नहीं बदल पाएंगी। अंत में दोनों चुपचाप होकर बैठ गईं। हवा में एक गहरा सन्नाटा छा गया।

दिन बीतने गए।

कभी–कभी दोनों कबूतर मुर्गियों के दबड़े के पास आकर रुकते और अंडे की प्रगति का हालचाल पूछते।

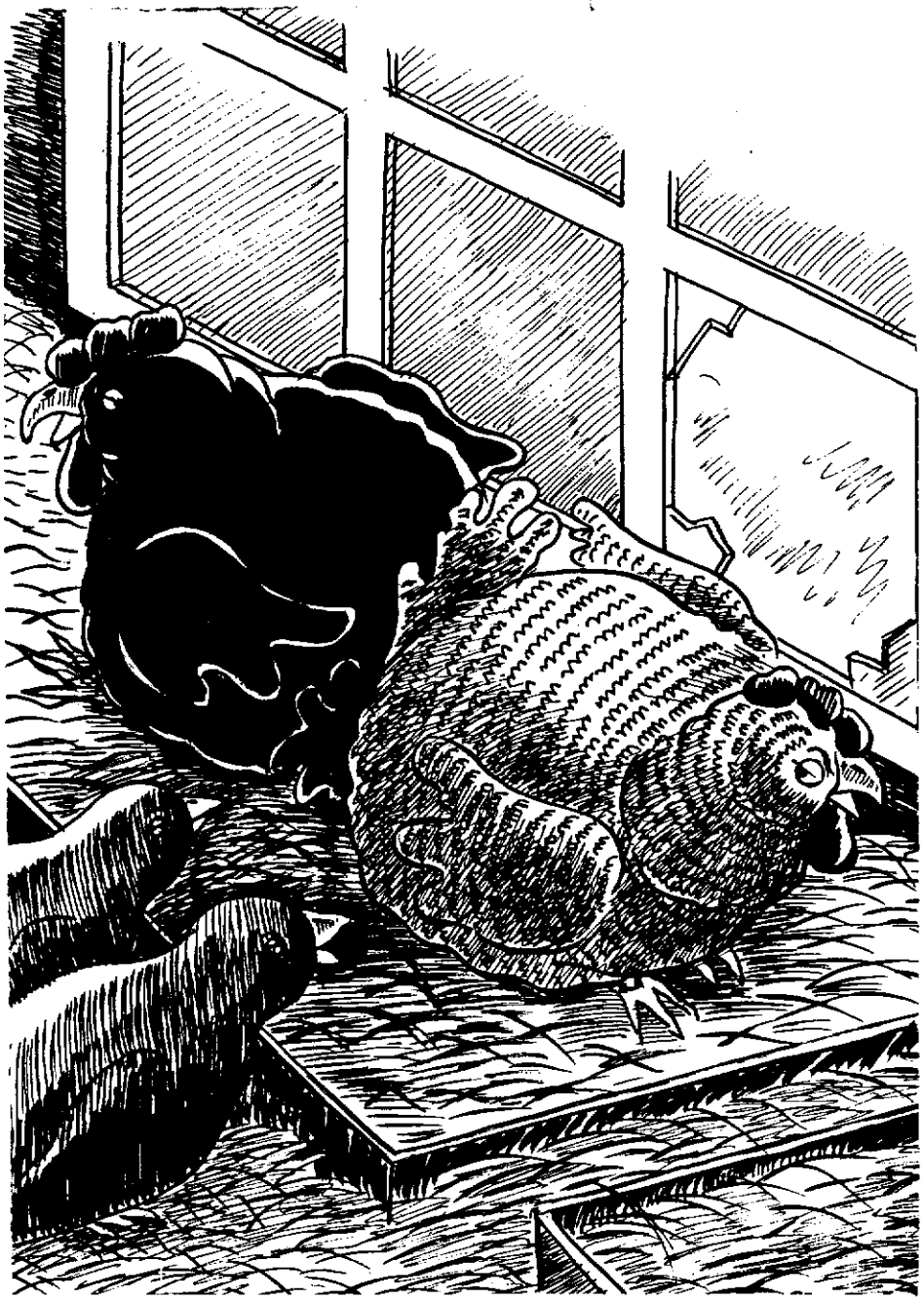

इधर कूकू और भूरी बिना हिले–डुले बैठी रहतीं। वे एक–दूसरे की पड़ोसी हैं इसे भी मानने से इंकार करतीं।

एक कबूतर ने सुझाव दिया, ''खाली बैठे–बैठे ऊबने की बजाए आप एक–दूसरे का कुछ मनोरंजन ही करें – आप में से एक गाना गाए और दूसरा कहानी सुनाए तो कितना अच्छा हो।''

''वाह!'' कूकू बोली, ''मुझे तो बस एक ही कहानी आती है – कि मैं कब अपने चूजे के साथ घूमूंगी और इसमें मुझे कितना मज़ा आएगा।''

''नहीं!'' भूरी गुर्राई, ''मैं अपने चूजे को बाहर लेकर घूमूंगी।''

फिर दोनो मुर्गियां शांत हो गईं। आगे क्या होगा, वो इस बारे में सोचने लगीं।

इतने दिनों तक कुत्ता केवल एक चीज़ के बारे में सोचता रहा – कि वो दबड़े में उस आखिरी अंडे को क्यों छोड़ आया। उसे बार–बार अंडे की याद सता रही थी। वो दबड़े में वापिस जाकर उस अंडे को खाना चाहता था।

दबड़े में पहुंच कर मैं उस अंडे के साथ–साथ उन दोनों मुर्गियों को भी हज़म करुंगा। इस मंशा के साथ कुत्ता दबड़े की ओर बढ़ा।

इस बीच दोनों मुर्गियों के बीच में अनबन और बढ़ गई। अगर वो एक–दूसरे से बात करतीं तो उसका कारण होता शिकायत करना।

''गुनगुनाना बंद करो!''

''अपने पंजे हिलाना बंद करो!''

''थोड़ी दूर खिसको!''

दोनों गुस्से से तमतमा रहीं थीं।

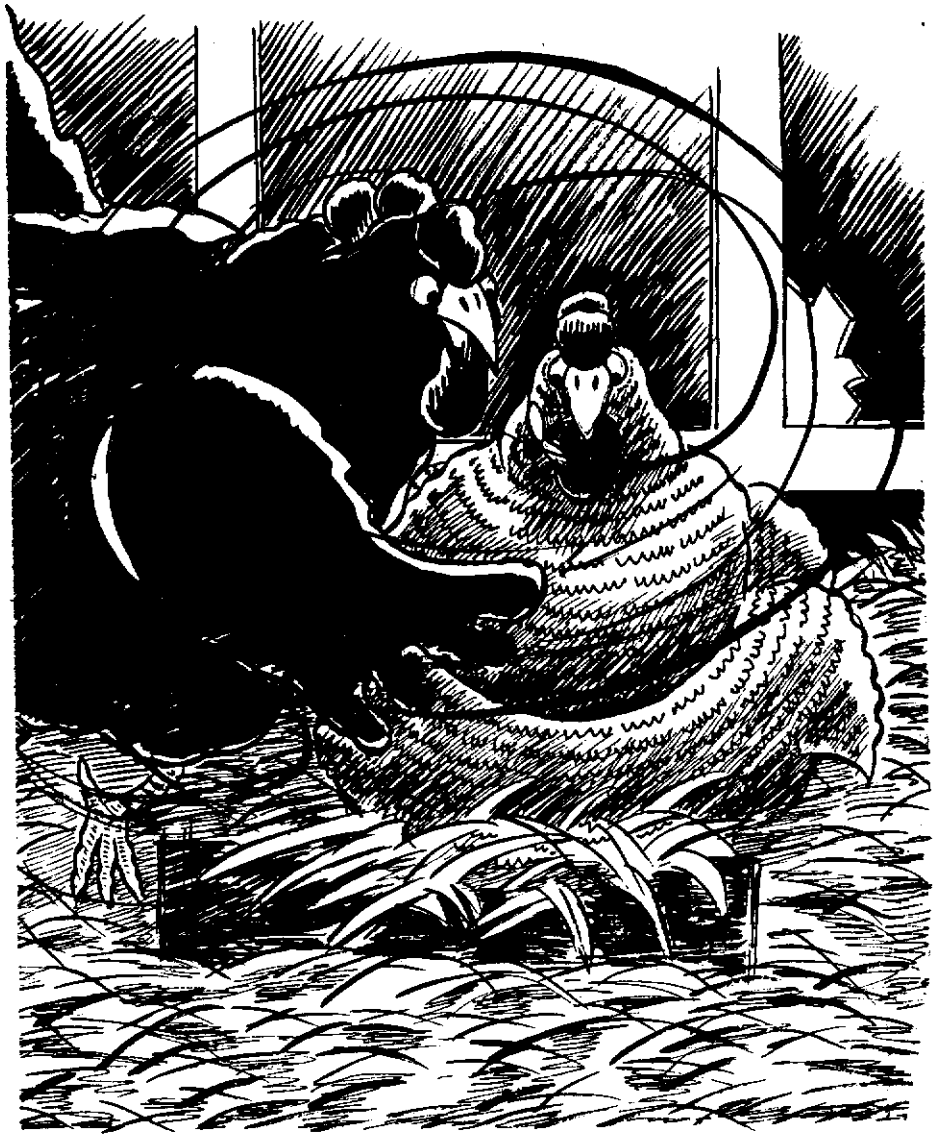

तभी कहीं से एक मक्खी भिनभिनाती हुई दबड़े में घुस आई। मक्खी भिन–भिन करती और चारों ओर उड़ती। कभी वो कूकू की नाक पर बैठती और कभी भूरी की पीठ को गुदगुदाती। अंत में मक्खी से दोनों मुर्गियां परेशान हो गईं। दोनो सहायता के लिए चीखने तक को तैयार हो गईं।

तभी मक्खी कूकू की चोंच के पास उड़ती हुई आई।

भूरी मक्खी को पकड़ने के लिए उड़ी। परंतु भूरी मक्खी को पकड़ नहीं पाई।

भूरी, कूकू से जाकर धड़ाम से टकराई।

''देखो, इसने फिर से लड़ाई शुरू कर दी,'' कूकू चिल्लाई। कूकू तब ज़मीन पर कूदी और भूरी को पकड़ कर खदेड़ने लगी।

कुत्ते को हमला बोलने का यही सही समय लगा।

ध – ड़ा – म करके कुत्ता खिड़की में से कूदा।

पहले तो कूकू और भूरी एकदम सहम गईं। फिर वो दोनों हिम्मत बटोर कर कुत्ते का सामना करने के लिए आगे बढ़ीं।

"कुत्ते को रोको," कूकू चिल्लाई।

"उसे अंडे के पास मत जाने दो," भूरी गुर्राई।

फिर क्या था। कूकू कुत्ते की पीठ पर कूदी और भूरी कुत्ते के सिर पर कूदी। दोनों लड़ाकू मुर्गियों ने कुत्ते को अपनी पैनी चोंचों से गोदा और अपने नुकीले पंजों से नोंचा। कुत्ता बहुत चीखा–चिल्लाया परंतु मुर्गियों ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। अंत में कुत्ता किसी तरह खिड़की से कूद कर अपनी जान बचा कर भागा।

लड़ते–लड़ते दोनों मुर्गियां थक कर एकदम पस्त हो गईं थीं। वे भी सुस्ताने के लिए दबड़े में लेट गईं।

''हमारी जीत हुई,'' कूकू ने कहा, ''हमने कुत्ते की जमकर पिटाई की।''

भूरी ने कहा, ''क्या कोई कभी सोच भी सकता था कि हम दोनों इतने बहादुर निकलेंगे?''

जीत की खुशी से दोनों मुर्गियों का दिमाग चक्कर खाने लगा। अंत में वो आराम करने के लिए दबड़े की घास पर बैठ गईं।

''यह लड़ाई एक मुर्गी के बस की नहीं थी,'' भूरी ने कहा।

जीवन में पहली बार कूकू ने भूरी की बात मानी, ''हम कितने भाग्यशाली हैं कि हम दोनों एक–साथ थे,'' कूकू ने कहा।

यह सोच कर दोनों मुर्गियां इतनी खुश हुईं कि वे एक–दूसरे से लिपट कर रोने लगीं।

''चुप! ज़रा सुनो!'' भूरी ने कहा।

नीचे अंडे में से हल्की सी आवाज़ आ रही थी।

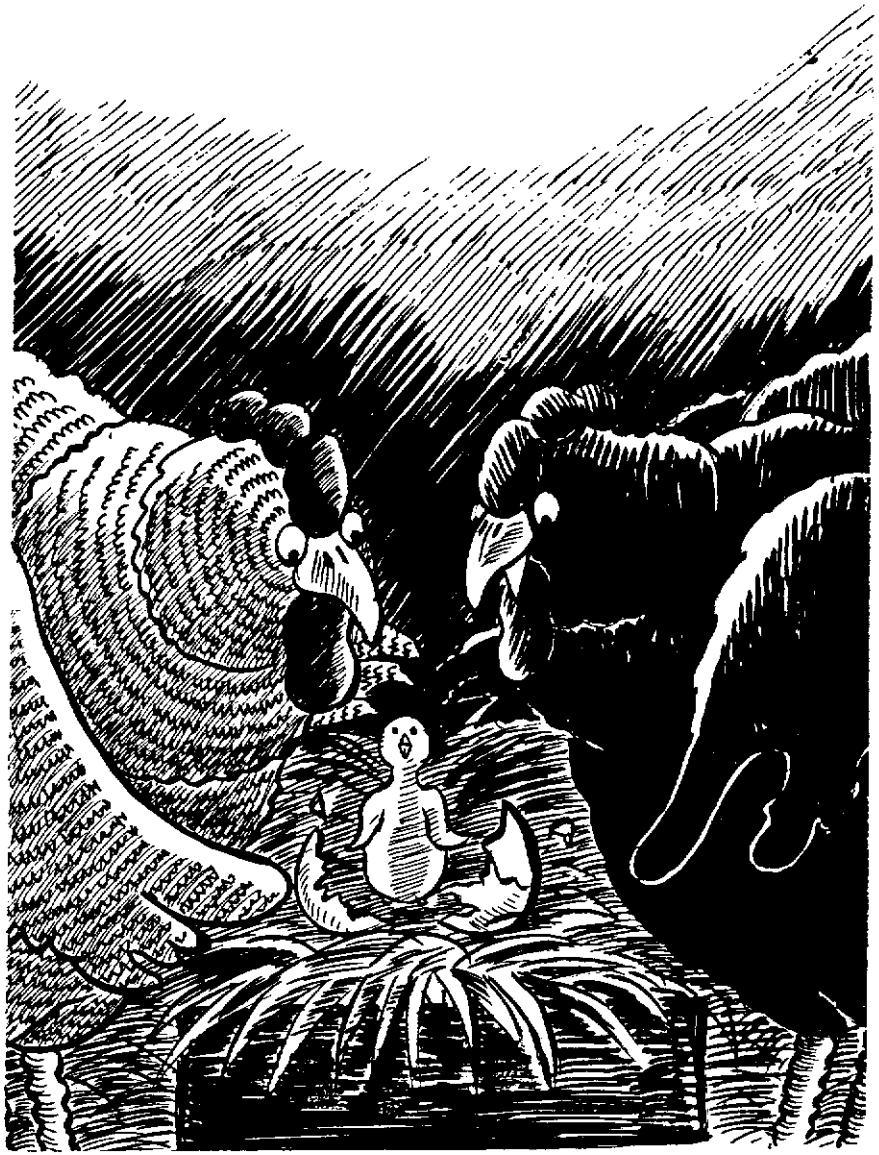

''हमारा अंडा!'' दोनों पहली बार मिलकर चिल्लाईं।

कूकू और भूरी दोनों घोंसले के पास आ गईं और उत्सुकता से अंडे को ताकने लगीं। पहले तो अंडे पर एक हल्की सी दरार पड़ी। परंतु फिर बहुत देर तक कुछ भी नहीं हुआ। समय बीत ही नहीं रहा था। घंटे, दिनों जैसे लगने लगे। पर अंत में अंडा फूटा और उसके खोल में से एक नन्हा सा, गीला सा, एक हड्डी वाला चूजा बाहर निकला।

''कितना सुंदर है!'' कूकू ने मन में चूजे को देखकर लड्डू फूटने लगे।

''सच में कितना खूबसूरत है!'' भूरी ने हामी भरते हुए कहा।

कूकू ने चूजे का पास से मुआयना करते हुए कहा, ''देखो भूरी, इस चूजे की चोंच तो बिल्कुल तुम से मिलती है।''

''परंतु इसके पैर तो बिल्कुल तुम्हारे पैरों जैसे हैं, कूकू,'' भूरी ने कहा। छोटे से

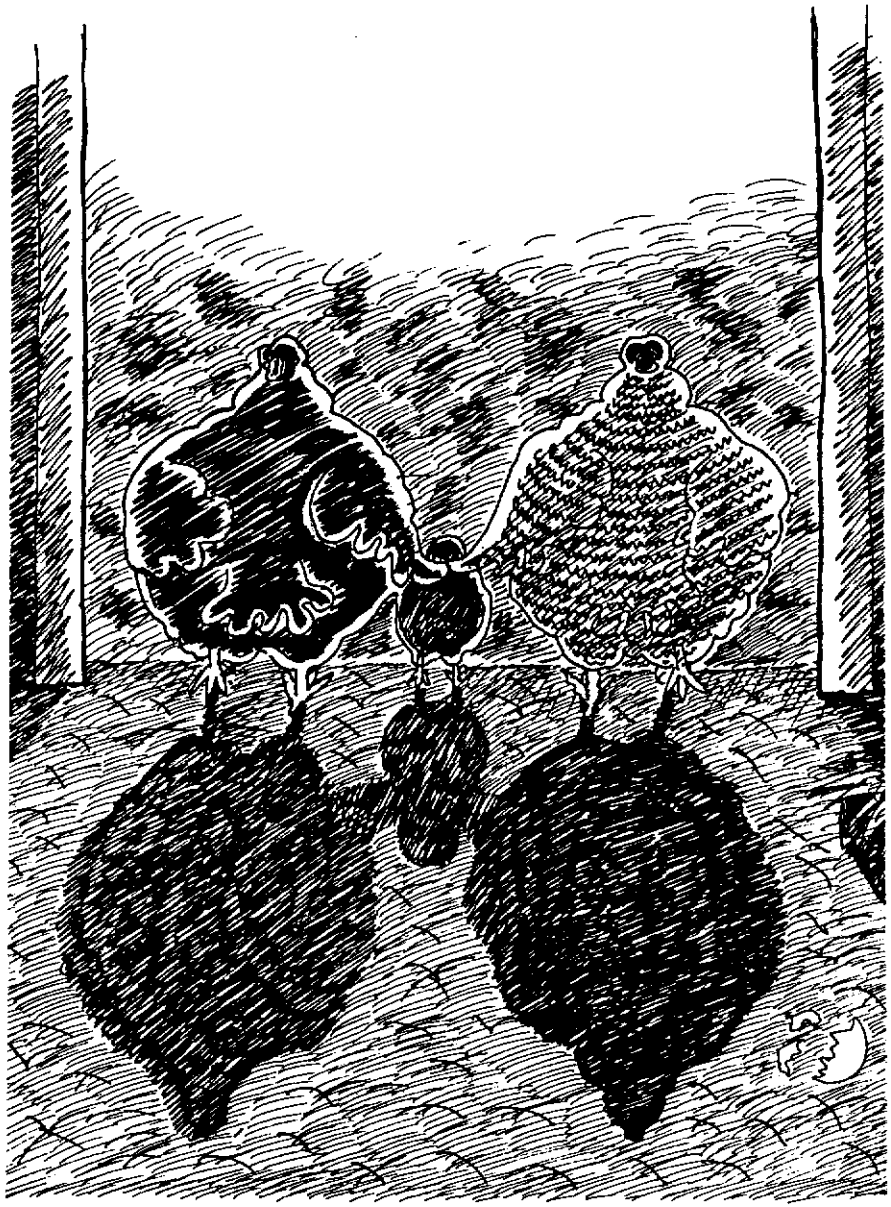

चूजे ने दोनों मुर्गियों की आंखों में प्यार से झांक कर देखा।

''हमारा चूजा दुनिया में सबसे प्यारा है,'' कूकू और भूरी दोनों गाने लगीं।

दुनिया में शायद ही कोई ऐसा चूजा हो जिसे इतना प्यार और दुलार मिला हो।

ऐसा चूजा जिसकी एक नहीं बल्कि दो मां हों।

इसका मतलब यह नहीं कि कूकू और भूरी की बाद में कभी लड़ाई नहीं हुई।

वो खूब लड़ती भी थीं परंतु उनमें गहरी दोस्ती भी थी।

और एक बात पर तो उन दोनों में सौ प्रतिशत सहमति थी – वो था उनका चूजा।

उनकी राय में उनका चूजा दुनिया का सबसे सुंदर, सबसे होशियार, सबसे लायक चूजा था।

और सच में यही तो वो बात है जो वाकई में मायने रखती है।

❐❐❐

जन वाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

" किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं "

-सफ़दर हाश्मी

दो झगड़ालू मुर्गियों की कहानी जिसका फायदा एक कुत्ता उठाता है। कुत्ता उनके सभी अंडे खा जाता है। अंत में केवल एक ही अंडा बचता है। कूकू और भूरी अपने इकलौते चूजे को बड़े प्यार से पालती पोसती हैं। नये युग की नई कथा।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : 15 रुपये B - 44 Price : 15 Rupees